ISSN : 2320-0391

सृजन ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

जनवरी-मार्च २०१९

त्रैमासिक पत्रिका

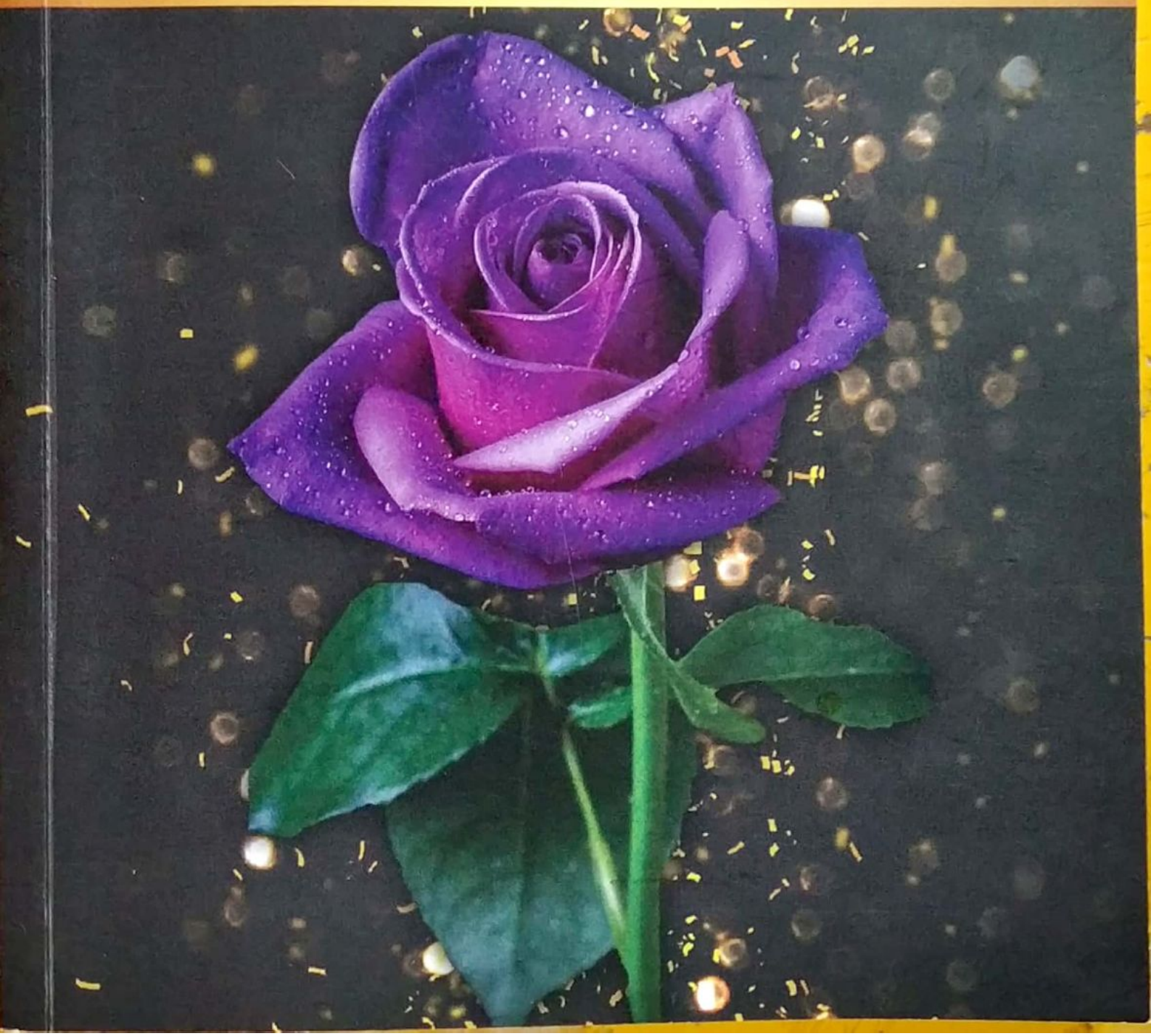

Scanned by CamScanner

RNI Regd. No. KARBIL/2014/54464 Postal Regd. No/ PMG/KA/NK/BJP/60/2017-19

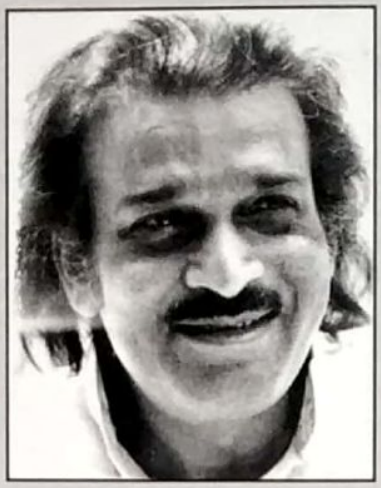

तेजी से जाती हुई कार के पीछे
पथ पर गिरे पडे
निर्जीव सूखे पत्तों ने भी
कुछ दूर दौड कर गर्व से कहा...

'हम में भी गति है,
सुनो, हम में भी जीवन है,
रुको-रुको, हम भी
साथ चलते हैं
हम भी प्रगतिशील हैं ।'

लेकिन उनसे कौन कहे-
प्रगति पिछलग्गूपन नहीं है
और जीवन, आगे बढने के लिए
दूसरों का मुँह नहीं ताकता ।

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

ರಭಸದಿಂದ ಹೊರಟ ಕಾರಿನ ಹಿಂದೆ
ದಾರಿಯ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದ
ನಿರ್ಜೀವ ಒಣಗಿದ ಎಲೆಗಳು
ಸ್ವಲ್ಪು ದೂರ ಓಡುತ್ತಾ
ಗರ್ವದಿಂದ ಹೇಳಿದವು...

'ನಮ್ಮಲ್ಲಿಯೂ ಓಡುವ ಸಾರ್ಮರ್ಥ್ಯ ಇದೆ
ಕೇಳು, ನಮ್ಮ ಜೀವನವು ಇದೆ
ನಿಲ್ಲು – ನಿಲ್ಲು ನಾವೂ
ಜೊತೆಗೆ ನಡೆಯುತ್ತೇವೆ
ಪ್ರಗತಿಯತ್ತ ನಾವೂ ಸಾಗಿದ್ದೇವೆ.'

ಆದರೆ ಅವರಿಗೆ ಯಾರು ಹೇಳುವರು–
ಪ್ರಗತಿ ಬೆನ್ನತ್ತಿ ನಡೆಯುವದಲ್ಲ
ಮತ್ತು ಜೀವನ ಮುಂದುವರೆಸಲು
ಸ್ವಾವಲಂಬಿಯಾಗಿರಬೇಕೆಂದು.

– ಸರ್ವೇಶ್ವರದಯಾಲ ಸಕ್ಸೇನಾ

ISSN 2320-0391
9 772320 039008

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज' महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने,
विजयपुर - 586103 (कर्नाटक)

ಸೌಮ್ಯ ಪ್ರಕಾಶನ
'ಕಬೀರ ಕುಂಜ' ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ,
ದರ್ಗಾ ಜೇಲ ಮುಂದೆ,
ವಿಜಯಪುರ – ೫೮೬೧೦೩ (ಕರ್ನಾಟಕ)

Scanned by CamScanner

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का योगदान
(टी.वी. चैनल्स, इंटरनेट और पत्रिकाओं के विशेष संदर्भ में)

• डॉ. एस. टी मेरवाडे

हिंदी का प्रचार और प्रसार बॉलीवुड के माध्यम से अंतरराष्ट्रिय स्तर पर जितना हुआ है उतना किसी दूसरे माध्यम से अभी देखने में नहीं आया। हिंदी के अधिकतर शब्द जो पिछले 50 वर्षो में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में जुडे हैं वे या तो भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था या फिर बॉलीवुड के रास्ते इंग्लैंड पहुँचे हैं। यह कहना कि बॉलीवुड अथवा टी.वी. ने हिंदी साहित्य का प्रचार किया है सीधे तौर पर शायद उचित न हो लेकिन भाषा और कभी-कभी साहित्यिक कृतियों के फिल्मांकन से अवश्य हिंदी साहित्य को एक सीमा तक फ़ायदा पहुँचा है। लेकिन ऐसा सिर्फ ऐसी साहित्यिक कृतियों के संदर्भ में कहना उचित होगा, जिनकी स्क्रिप्ट भी उपलब्ध है। आमतौर पर हिंदी फिल्मों मूल हिंदी से नहीं बल्कि जिस देश में दिखायी जाती है उस देश की भाषा में डब्बिंग करके दिखायी जाती है। हम फिर से उसी सवाल पर अटक जाते है कि क्या अनुवाद सही और पूरा था कि नहीं। बॉलीवुड दुनिया में सिर्फ ट्रेंड ही नहीं बना बल्कि इसने अनेक देशों में इंडोलॉजी के छात्र-छात्राओं के लिए रोजगार का सृजन भी किया है। हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का उपयोग विश्व में अनेक स्तरों पर बढा है लेकिन चूँकि उसका सीधा संबंध हिंदी साहित्य से नहीं है तो उस विषय पर विस्तार से विचार करना यहाँ उचित नहीं होगा।

पिछले कुछ वर्षो में भारत में हिंदी टीवी चैनलों की संख्या बढ़ी है और ऐसा भी देखा गया है कि कई न्यूज चैनल्स जो अंग्रेजी में शुरू हुए थे वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते स्टार न्यूज, ई. एस. पी. एन तथा स्टार स्पोर्टस जैसे चैनल हिंदी में भी रूपांतरित हो गए। कई चैनलों ने अपनी हिंदी सेवा शुरू की है और यहाँ तक कि जी टी.वी. अब पूरे यूरोप में हिंदी फिल्में दिखा रहा। हिंदी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह-चैनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का भी विशेष योगदान है। हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए भारतीय उपमहाद्वीप में ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मॉरिशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाडी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। अकेले मॉरिशस में हिंदी के सात चैनल कुछ वर्षों से काम कर रहे हैं। यू.ए.ई. में एफ. एम. रेडियो के कम से कम तीन ऐसे चैनल हैं, जहाँ आप चौबीसों घंटे नए अथवा पुराने हिन्दी फिल्मों के गीत सुन सकते हैं। एफ. एम. रेडियो के विकास से

Scanned by CamScanner

भी हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। यद्यपि वर्तमान में भारत में छापे जाने वाले समाचार - पत्र आधे से अधिक हिंदी में छप रहे हैं लेकिन अंतरराष्ट्रिय स्तर पर उनका प्रभाव इतना नहीं है। मेरी जानकारी में यूरोप के किसी देश में हिंदी में अख़बार नहीं छपता। इंटर लोगों को हिंदी साहित्य उपलब्ध करवाने में बड़ी भूमिका निभा रहा है। हिंदी समय, हिंदी नेस्ट, भारतकोश, कविता कोश, गद्यकोश और अन्य वेबसाइट्स। ये वेबसाइट्स हमेशा मददगार नहीं होतीं क्योंकि अनेकों कृतियों के गद्यांश और पद्यांश में वर्तनी की अनगिनित भूलें होती हैं। इस वजह से कई बार जब नॉन हिंदी पाठक उस गद्यांश अथवा पद्यांश को पढ़ता है तो उसी के साथ एक नयी समस्या पैदा हो जाती है। उदाहरण स्वरूप हम हिंदी समय को ही लें तो विश्लेषण करने पर पता चलता है कि हिंदी समय की वेबसाइट पर अपलोड की गयी कृतियों के टेक्स्ट में 20 से 35 प्रतिशत वर्तनियों और व्याकरण की गलतियाँ मिलती हैं।

हिंदी साहित्यिक पत्रिकाएँ

अंतरराष्ट्रिय स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रचार एवं प्रसार के लिए दुनिया भर में अनेकों हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है। उनमें से कुछ पत्रिकाएँ व्दिभाषी भी छपती हैं जिससे हिंदी के साथ ही, विदेशी पाठकों को हिंदी साहित्यिक कृति, विशेषतः कहानी एवं कविता विधा में अनूदित रूप में पढ़ने को मिल जाती है। हिंदी में, यानि देवनागरी स्क्रिप्ट में जो भी अधिकत्तर पत्रिकाएँ हैं उनको भारतीय मूल के लोगों के द्वारा ही छापा जा रहा है। वर्तमान में कुछ हिंदी साहित्यिक पत्रिकाएँ भारत से बाहर छप रही हैं, यथा- अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति, अनुभूति संयुक्त अरब अमीरात, अन्यथा (अमेरिका,) अभिव्यक्ति (संयुक्त अरब अमीरात,) इ-विश्वा (अंतरराष्ट्रिय हिंदी समिति, सेलम की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका,) कर्मभूमि (अमेरिका,) गर्भनाल अमेरिका, भोपाल, पुरवाई इंग्लैंड, प्रवासी दुनिया अक्षरम,अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था, भारत दर्शन (न्यूजीलैण्ड), लितेरातूर फोरुम (जर्मनी), पत्रिका (जर्मन) में ही छपती है लेकिन कभी-कभी देवनागरी देक्स्ट भी छापा जाता है, सरस्वती पत्र (कनाडा), स्पाइल दर्पण (नौर्वे), द्विभाषी पत्रिका, हिन्दी परिचय पत्रिका, इत्यादि पत्रिकाएँ । मॉरिशस में वसंत, रिमाझिम, पंकज, आक्रोश, इन्द्रधनुष, जनवाणी एवं आर्योदय हिन्दी में प्रकाशित हो रहे हैं।

अंतरराष्ट्रिय स्तर पर इन पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका यह भी है कि वे नवसृजनकर्ताओं को एक अवसर प्रदान करती हैं। भारत से बाहर छपने वाली हिंदी पत्रिकाओं की संख्या यदि प्रवासी भारतीयों की जनसंख्या तथा हिंदी में दिलचस्पी रखने वालों की संख्या से अगर तुलना की जाए तो हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या प्रवासी भारतीयों की जनसंख्या तथा हिंदी में दिलचस्पी रखने वालों की संख्याके सापेक्ष बहुत ही कम है। इसे पैराडॉक्स ही कहा जाएगा कि कंप्यूटर और इन्फॉर्मेशन का जब भारत आगमन हुआ तो अधिकत्तर लेखक इसके विरूद्ध थे और टेलीविजन को वे लोग सिनेमा की मृत्यु का संदेशवाहक मान रहे थे लेकिन आज सूचना प्रौद्योगिकी के युग में वह बहस एकदम उलट गयी है। इसी विषय को संदर्भ बनाते हुए तद्भव के संपादक अखिलेश मई 2011 के विशेषांक के संपादकीय में लिखते हैं कि... टेलीविजन को सिनेमा और साहित्य दोनों का संहारक माना गया। रंगीन टेलीविजन के खिलाफ़ तो बकायदा वैचारिक संघर्ष हुआ था और कंप्यूटर की भर्त्सना में बौद्धिक दुनिया ने विराट प्रतिरोध दर्ज किया था । इतना ही नहीं हमारे कुछ महत्वपूर्ण कवियों ने कंप्यूटर की निंदा करते हुए अपनी कविता में उसे ना छूने तक की प्रतिज्ञा की थी।

Scanned by CamScanner

हिंदी साहित्यिक सम्मेलन एवं कार्यशालाएँ : हिंदी साहित्य सम्मेलनों में सबसे प्रमुख विश्व सम्मेलन को गिना जाता है, जिसकी शुरूआत 1975 में नागपुर से हुई थी। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की सूचना के अनुसार अबतक हुए दस सम्मेलनों में से सात सम्मेलन क्रमशः पोर्ट लुइस, (मॉरिशस) 1976; पोर्ट लुइस, (मॉरिशस) 1993; पोर्ट आफ स्पेन, (त्रिनिदाद) एवं (टोबैगो) 1996; लंदन, युनाइटेड किंगडम 1999; पेरामरिबो, सूरीनाम 2003; न्यूयॉर्क, यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका 2007 और जोहन्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका 2012 में हो चुके हैं। ग्याहरवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सितम्बर 2018 में पोर्ट लुइस, मॉरिशस में प्रस्तावित है। प्रारंभ में इसका आयोजन हर चौथे वर्ष आयोजित किया जाता था लेकिन अब यह अंतराल घटाकर 3 वर्ष कर दिया गया है। विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रिय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिन्दी विद्वान साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं। अंतरराष्ट्रिय स्तर पर भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने, समय-समय पर हिन्दी की विकास यात्रा का अकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिन्दी साहित्य के प्रति सरोकारों को और दृढ करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्त्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से 1975 में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शृंखला गयी थी। हर विश्व हिंदी सम्मेलन के अंत में कुछ मंतव्य अथवा उद्देश्य पारित किए जाते हैं, जिनका अक्षरशः पालन आज तक नहीं हो पाया। अगला विश्व हिंदी सम्मेलन सितम्बर में होना निश्चित है लेकिन अभी तक इस संदर्भ में कोई जानकारी तक लोगों को नहीं दी गयी। तीन वर्षों के आयोजन कार्य को सिर्फ़ कुछ ही महीनों में और वह भी विश्व स्तर पर गुणात्मक ढंग से पूरा मुश्किल काम होगा।

जो भी हो, इतना तो निश्चित है कि विश्व हिंदी सम्मेलन की अंतरराष्ट्रिय स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रचार और प्रचार, हिंदी साहित्य को विश्व की दूसरी भाषाओं में अनुवाद की संभावना और साहित्यकारों, आलोचकों एवं पाठकों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सम्मेलन में लगभग हिंदी की सभी विधाओं पर विचार किया जाता है, जो इंडोलॉजी के छात्र-छात्राओं के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। इसके साथ ही सरकारी स्तर पर हिंदी के लेखकों की कृतियों को पुरस्कृत करके, कम से कम कुछ लोगों में हिंदी के प्रति उत्साह बढाता है। विश्व हिंदी सम्मेलन साहित्यकार, प्राध्यापक, शोधार्थी, पब्लिशर को एक मंच पर लाता है और प्राध्यापक तथा शोधार्थी को लेखक और उसके साहित्य को और बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है । इसके साथ ही वर्तनी, व्याकरण एवं वाक्य रचना की गलतियाँ की जानकारी को पब्लिशर को दी जाती है। साहित्यिक सम्मेलन सभी प्रतिभागियों को एक-दूसरे से संपर्क बढाने, प्रतिबद्धता विकसित करने, अनुभव के लिए अवसर प्रदान करने और विभिन्न साहित्यिक कृतियों में प्रतिभागियों की रूचि बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक का कार्य करता है। हिंदी भाषा एवं साहित्य पर यूरोप, अमेरिका और दुनिया के अन्य देशों और कई अंतरराष्ट्रिय सम्मेलन होते हैं जिनमें दुनियाभर में फैले हिंदी के विशेषज्ञ, शोधार्थी, लेखक और आयोजक शामिल होते हैं। उनमें से दो सम्मेलन ही महत्वपूर्ण हैं- यूरोपियन कॉन्फ्रन्स ऑन साउथ एशियन स्टडीज़ (यूरोप) और एनुअल कॉन्फ्रन्स ऑन साउथ एशिया (अमेरिका)। ये दोनों सम्मेलन बहुत ही उपयोगी माने जाते हैं तथा इनमें भारत सहित दुनिया के हिंदी

Scanned by CamScanner

विशेषज्ञ भाग लेते हैं। चूँकि इन दोनों सम्मेलनों में सिर्फ़ हिंदी के विद्वान ही नहीं बल्कि अन्य विषयो, जैसे राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान और भाषा विज्ञान (प्राचीन एवं आधुनिक भारत-विद्या) के विद्वान भी भाग लेते हैं अतः ये सम्मेलन अंग्रेजी भाषा में आयोजित किए जाते हैं और चूँकि हिंदी सिर्फ़ अनूदित रूप में प्रयुक्त होती है इसलिए हिंदी साहित्य की दृष्टि से ये दोनों सम्मेलन हिंदी के लिए इतने अच्छे प्लेटफॉर्म सिध्द नहीं होते । आईसीसीआर (भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली) भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पीआर समय-समय पर क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन करवाता रहता है। पिछला बड़ा सम्मेलन 2016 में पेरिस में हुआ था। इसके साथ ही भारत सरकार आई.सी.सी.आर. के माध्यम से दुनिया के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य के लिए हिंदी के विशेषज्ञों को तीन छह महीनों, एक वर्ष, दो वर्षों या तीन वर्षों के लिए भेजती है, जिनकी पिछले वर्षों में संख्या बढ़ी है लेकिन दूसरी तरफ़ वास्तव में इस प्रोग्राम में भाग लेने वाले विशेषज्ञों की संख्या में कमी आयी है। युरोप और अमेरिका में भी अनेकों इंडोलॉजी की चेयरें खत्म की की जा रही हैं। इसके पीछे कभी तो आर्थिक समस्याओं का हवाला दिया जाता है, कभी कम छात्रों का। लेकिन यह भी सत्य है कि कई मामलों में चेयर पर आसीन व्यक्ति ही इसके ज्यादा ज़िम्मेदार रहता है। इसके साथ ही कुछ पब्लिशर्स एवं संस्थान मिलकर हिंदी साहित्य वर्कशॉप्स का आयोजन करते हैं। जर्मनी में लिटरेचर फ़ोरम, साउथ एशियन इन्फ़ो जैसी संस्थाएँ इस तरह की साहित्यिक वर्कशॉप करवाती रहती हैं, जिसमें हिंदी लेखक और विदेशी हिंदी विशेषज्ञ और अनुवादक भाग लेते हैं और अनुवाद की समस्याओं पर विचार करते हैं। कहने का तात्पर्य है कि हिंदी साहित्य पर दुनिया में कम से कम कुछ मामलों में पहले से अधिक ध्यान दिया जा रहा है और हिंदी साहित्य का नॉट लिया जा रहा है।

■■

हिन्दी विभाग, एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, भावनगर
मो. 9448185705

Scanned by CamScanner